दिल्ली से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी पाक्षिक 'Back to Godhead' का हिन्दी रूपान्तर

व्यवस्था सम्बन्धी पत्र व्यवहार के लिए :-
एस०एन० अग्रवाल
अवैत० व्यवस्थापक भगवद्दर्शन' कार्यालय वेनीमाधो को धर्म-शाला के सामने, गया प्रसाद लेन, कानपुर ।

यन्नामधेयश्रवनानुकीर्त्तनाद् यत् प्रह्वणादयत् स्मरणादपि क्वचित् ।
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥

भगवद्दर्शन

विज्ञापन की दर
ईयर पैनेल ५/प्रति
अन्य पृष्ठों पर
३) कालम इंच
(प्रथम पृष्ठ पर ईयर पैनेल के अतिरिक्त विज्ञापन स्वीकार न होंगे)।

(विपथगामी, आस्थाहीन एवं जिज्ञासु मानव को भगवन्मुख करने वाली निष्पक्ष धार्मिक पाक्षिक पत्रिका)

संस्थापक, संरक्षक एवं सम्पादक
प्रभुपाद श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी का अनुकम्पित दास—
गोस्वामी अभयचरण भक्तिवेदान्त सम्पादक 'Back to Godhead'
सहकारी सम्पादक: वेदप्रकाश भार्गव

वर्ष १
अंक २

कानपुर, सोमवार १५ जुलाई १९५७

वार्षिक मूल्य २ रुपया
२५ नये पैसे
एक प्रति का १० नये पैसे

पाप का बीज और वृक्ष

"मैं जगत का भोग करूँगा" "मैं जगत का स्वामी बन जाऊँगा" "जगत की जितनी धन सम्पत्ति है, सभी मेरे अधीन हो जायगी" इस प्रकारकी भौतिकवादी मनोवृत्ति में पाप बीज के अंकुर मिलते है। जैसे 'टाइफाइड' 'इन्फ्लुएन्जा' या मैलेरिया आदि रोगों से शरीर में एक प्रकार के ताप की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार पवित्र जीवात्मा जब अपने स्वरूप से विच्युत होकर भौतिक सम्बन्धों में लिप्त हो जाता है और दैवी माया के फेर में उपरोक्त भौतिक परिचयों से अपने को स्थापित करता है तभी समझना चाहिये कि पाप बीज का रोपण हो गया है। पाप बीज अविद्या का ही एक अंग है। अविद्या या कर्म संज्ञा शक्ति विष्णु भगवान की तृतीया शक्ति के नाम से भी परिचित है। पाप की विपरीत संज्ञा का नाम है पुण्य। पुण्य की सम्भावनाएँ हमारे व्यवहार में कभी कभी दृष्टिगोचर अवश्य होती हैं, कभी तो वे सद्भावनाएं पशुओं के अन्दर भी प्रकाश पाती हैं। कुत्ते का उदाहरण इसका प्रमाण है, उसके अन्दर भी पुण्य की सद्भावना 'जैसे स्वामी की भक्ति' दिखाई पड़ती है। पशुओं की अपेक्षा मनुष्य में सद्भावनाएं अधिक परिमाण में दिखाई देती हैं। अतः विश्लेषण करके देखने से पाप और पुण्य दोनों ही मनुष्य तथा मनुष्येतर जानवरों के अन्दर स्पष्ट मालूम होते हैं। दूसरे शब्दों में इसे इस प्रकार समझना चाहिए कि पाप जीवात्माओं के लिए एक बाहरी आवरण है जो कि जीवात्मा के साथ त्रिगुणमयी माया के सम्बन्ध होने से ही प्रकाट होता है। त्रिगुणों का नाम है सतो, रजो, तमो, परन्तु गुणों से च हें जितनी ही सावधानी से रहें, जीवात्मा उनके प्रभाव से पाप बीज अवश्य ही रोपण कर लेता है।

त्रिगुणमयी माया का अपर नाम है प्रकृति अथवा स्वभाव और जीवात्मा का अपर नाम है पुरुष अथवा भोक्ता। पुरुष दो प्रकार का होता है। एक तो क्षर पुरुष अर्थात् जो पुरुष गिरनेवाला है और दूसरे का नाम है अक्षर पुरुष अर्थात् जो गिरनेवाला नहीं है। क्षर पुरुष सब जीवात्माएं हैं और अक्षर पुरुष एक मात्र भगवान ही है। माया में गिरनेवाले क्षर पुरुष में ही पाप वासना सम्भव होती है परन्तु अक्षर पुरुष भगवान को पाप स्पर्श ही नहीं कर सकता, क्योंकि माया भगवान के आधीन तत्व है। भगवान के साथ में रहने वाली जो जो जीवात्माएं है उनको भी पाप का स्पर्श नहीं हो सकता। ऐसे ही क्षर पुरुष जब माया मुक्त होकर भगवान के पास चला जाता है, तो वह भी पाप से मुक्त हो जाता है। अतः निष्पाप होने का एक मात्र उपाय है भगवान के पास फिर लौट जाना।

पवित्र जीवात्मा का माया से संयोग कैसे होता है उसके विषय में भगवद्गीता में लिखा है:-

प्रकृतिम्, पुरुषम् चैव विद्धि अनादि उभौ अपि ।
विकारान् च गुणान् च एव विद्धि प्रकृति सम्भवान् ॥१३१६॥

अर्थात् जीवात्मा और प्रकृति दोनों ही सृष्टि अर्थात् जगत रचना के पहले से ही वर्तमान हैं। एक विशाल मकान रचना जगत की रचना के समान है। हमें ऐसा नहीं समझना चाहिए कि जगत रचना के साथ साथ जगत के उपादान कारण प्रकृति और जगत में बसने वाले जीवात्माओंकी भी सृष्टि हुई। जगत के उपादान कारण प्रकृति महत्तर्त्त में तथा जीवात्माएं नारायण के शरीर में सृजन के पहले से ही वर्तमान थे। इसीलिए प्रकृति और पुरुष अनादि माने गये हैं। अनादि का अर्थ है जगत की सृष्टि से पहले। जगत सृजन के समय से जो प्राकृत समय अथवा प्राकृत आकाश का सृजन हुआ है उसके पहले से ही जीवात्मा और प्रकृति भगवान की निहित शक्ति रूप से वर्त्तमान थीं। भूत भविष्यत् वर्तमान काल का विचार सृष्टि के पश्चात् ही माना गया है। परन्तु प्रकृति और पुरुष दोनों ही प्राकृत काल के अधीन नहीं हैं। जैसे परमब्रह्म अनादि अव्यय है उसी प्रकार जीवब्रह्म और प्रकृति ब्रह्म भी अनादि अव्यय हैं। प्रकृति और पुरुष भगवान की विभिन्न शक्तियाँ हैं। क्षर पुरुष जीवात्मा भगवान की पर प्रकृति है परन्तु भौतिक प्रकृति का नाम है अपरा प्रकृति। परा प्रकृति जीवात्मा, अपरा

(शेषांश चौथे पृष्ठ पर)

A copy of the
Bhagavad-darshan
The Hindi version of *Back to Godhead* magazine
dated 15th July 1957

BHAKTIVEDANTA RESEARCH CENTER
TRUTH · TRADITION · TRANSFORMATION